

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये सप्तसप्ततितमं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারায়ণীয়ে সপ্তসপ্ততিতমং দশকম্ ॥
উপশ্লোকোৎপত্তির্ণনং, জরাসন্ধাদিযুদ্ধর্ণনং, মুচকুন্দানুগ্রহর্ণনং

চ

সৈরঙ্ক্যাস্তদনু চিরং স্মরাতুরাযা
যাতোহভূঃ সুললিতমুদ্বরেন সার্থম্।
আরাসং ৳রদুপগমোৎসরং সর্দৈর
ধ্যায়ন্ত্যাঃ প্রতিদিনরাসসজ্জিকাযাঃ ॥ 77.1 ॥

উপগতে ৳রযি পূর্ণমনোরথাং
প্রমদসম্ভ্রমকম্প্রপযোধরাম্।
রিরিধমাননমাদধতীং মুদা
রহসি তাং রমযাঞ্চকৃষে সুখম্ ॥ 77.2 ॥

পৃষ্ঠা ররং পুনরসারবৃণোদ্ররাকী
ভূযস্তুযা সুরতমের নিশান্তরেষু।
সায়ুজ্যমস্তুিতি রদেং বুধ এর কামং
সামীপ্যমস্তুনিশমিত্যপি নাব্ররীং কিম্ ॥ 77.3 ॥

ততো ভরান্ দের নিশাসু কাসুচি -
নুগীদৃশং তাং নিভৃতং রিনোদযন্।
অদাদুপশ্লোক ইতি শ্রুতং সুতং
স নারদাৎ সাত্ত্বততন্ত্ররিদ্ বভৌ ॥ 77.4 ॥

অক্রুরমন্দিরমিতোহথ বলোদ্ধরাভ্যা -
মভ্যর্চিতো বহু নুতো মুদিতেন তেন।

एनं रिसृज्य रिपिनागतपाणुरेय -

बृत्तं रिरेदिथ तथा धृतराष्ट्रिचेष्टाम् ॥ 77.5 ॥

रिघाताज्जामातुः परमसुहृदो भोजनूपते -

र्जरासक्ने रुक्कत्यनरधिरुषाक्नेहथ मथुराम्।

रथादैर्दोर्दोर्लक्नेः कतिपयबलस्त्रुं बलयुत -

स्त्रयोरिंशत्यक्नोहिणि तदुपनीतं समहृथाः ॥ 77.6 ॥

बद्धं बलादथ बलेन बलोत्तरं एरं

डूयो बलोद्यमरसेन मुमोचिथैनम्।

निशेषदिग्जयसमाहृतरिश्रसैन्यां

कोहन्यस्ततो हि बलपौरुषरांस्तदानीम् ॥ 77.7 ॥

भग्नः स लग्नहृदयोहपि नृपैः प्रगुन्नो

युद्धं एरया र्यधित षोडशकृत् एरम्।

अक्नोहिनीः शिर शिरास्य जघन्नु रिषेण

सञ्जुय सैकनरतित्रिशतं तदानीम् ॥ 77.8 ॥

अष्टादशेहस्य समरे समुपेयुषि एरं

दृष्टरा पुरोहथ यरनं यरनत्रिकोट्या।

एरष्ट्वा रिधाप्य पुरमाशु पयोधिमध्ये

तत्राहथ योगबलतः स्वजनाननैषीः ॥ 77.9 ॥

पद्भ्यां एरं पद्ममाली चकित ईर पुरान्निर्गतो धारमानो

म्लेच्छेशेनानुयातो रधसुकृतरिहीनेन शैले न्यलैषीः।

सुप्लेनाङ्घ्र्याहतेन द्रुतमथ मुचुकुन्देन भस्मीकृतेहस्मिन्

डूपायाम्ने गुहान्ते सुललितरपुषा तस्त्रिषे भक्तिभाजे ॥ 77.10 ॥

ऀम्फ्राकोहहं रिरक्नोहस्म्याथिलनूपसुখে

एरंप्रसादैककाङ्क्षी

हा देरेति स्वरञ्जं रररिततिषु तं
निस्पृहं रीक्ष्य ह्यन्।
मुक्तेस्तुल्यां च भक्तिं धुतसकलमलं
मोक्षमप्याशु दत्त्वा
कार्यं हिंसारिशुद्धे तप इति च तदा
प्राथ लोकप्रतीत्ये ॥ 77.11 ॥

तदनु मथुरां गत्वा हत्वा चमूं यरनाहतां
मगधपतिना मार्गे सैन्येः पुरेर निरारितः।
चरमरिजयं दर्पायास्मै प्रदाय पलायितो
जलधिनगरीं यातो रातालयेस्वर पाहि माम् ॥ 77.12 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये सप्तसप्ततितमं दशकं समाप्तम् ॥